फ़िल्म समीक्षा

ब्रेकिंग द बैरियर

सरिता बलोनी

निर्देशन : सुषमा नारायण
भाषा : हिन्दी
अवधि : 60 मिनट
प्रस्तुति : सेंटर फ़ॉर मीडिया एण्ड कल्चरल स्टडीज़, टाटा इस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साईसेज़

इस वृत्तचित्र की शुरूआत एक औरत अपने अनुभवों को बताते हुए करती है। वह कहती है कि स्टोव पर खाना बनाते समय वह जल गई थी और घर पर कोई न होने के कारण पड़ोसी उसे अस्पताल ले गये थे। परन्तु उसकी पड़ोसिन का कहना कुछ अलग है। वह बताती है कि महिला ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर आग लगाई थी। उसका शराबी पति उस समय घर पर ही था।

फ़िल्म की सूत्रधार घरेलू हिंसा के इस मामले की बात करते हुए कहती है कि यह केस पुलिस थाने में दुर्घटना के तहत दर्ज है। पर सच्चाई यही है कि यह एक घरेलू हिंसा का मामला है। कुछ अन्य किरदार भी यह कहते हैं कि घरेलू हिंसा लोगों का व्यक्तिगत मामला होता है जिसमें पड़ोसी या बाहर वाले दखल नहीं दे सकते। लोगों को थाने जाकर शिकायत करने में भी डर लगता है।

इसके साथ-साथ फ़िल्म में कुछ वकीलों व सामाजिक कार्यकर्ताओं जैसे फ्लेविया एग्निस, हरीश सधानी, अंजली दवे के इस मुद्दे पर विचारों को भी शामिल किया गया है। लगभग सभी का मत है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था व समाज का पुरुष प्रधान ढांचा घरेलू हिंसा को बढ़ावा देते हुए इस पर ख़ामोशी की चादर डाल देता है।

फ़िल्म के तीसरे हिस्से में एक फ़ोरम की बैठक में घरेलू हिंसा की चर्चा हो रही है। इस चर्चा में घरेलू हिंसा झेल रही महिला के प्रति संवेदनशील रवैये, परामर्श केंद्र की अहमियत व भूमिका, संगठित विरोध की सशक्तता, पुलिस कर्मियों की ज़िम्मेदारी व कानूनी प्रक्रियाओं की समझ जैसे मुद्दे उठाए जा रहे हैं।

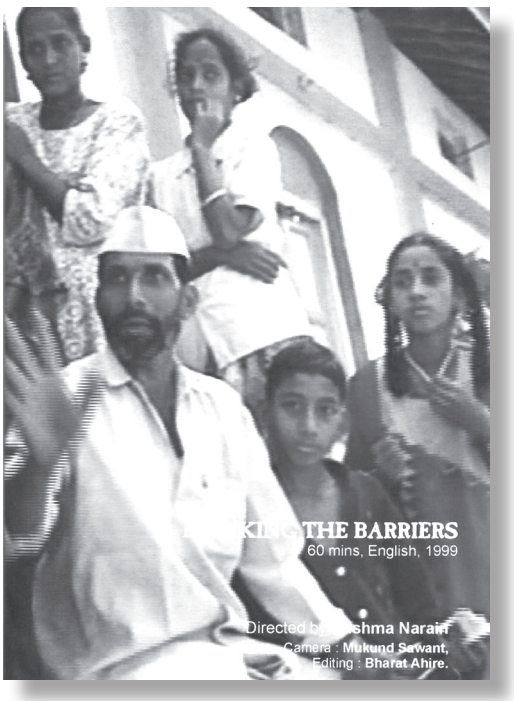

यह फ़िल्म इस बात पर ज़ोर देती है कि घरेलू हिंसा को व्यक्तिगत मामला मानने की सामाजिक सोच को बदलना बहुत ज़रूरी है। इसी सोच के कारण महिलाएं समझौते और ख़ामोशी को अपनी नियति मान लेती हैं। काफ़ी महिलाओं के लिए हिंसा और अत्याचार का यह सिलसिला उनकी मृत्यु के साथ ही खत्म होता है।

अंत में फ़िल्म यह समझाने का प्रयास करती है कि समुदाय, राज्य और महिलाओं के साथ मिलकर इस मुद्दे को मुख्यधारा में उजागर करना होगा। 'व्यक्तिगत ही राजनैतिक है' की सोच को अहमियत देते हुए घरेलू हिंसा को समाज के सामने लाने से ही कुछ बुनियादी बदलाव की उम्मीद की जा सकती है।

यह फ़िल्म एक अच्छी प्रशिक्षण सामग्री है जिसे महिला व हिंसा मुख्यतः घरेलू हिंसा के मुद्दे पर समझ बनाने, समाजिक रवैयों, पितृसत्तात्मक विचारधाराओं और खुद को दोषी मानने की महिलाओं की आदत पर गहन बहस छेड़ने के लिए उपयोगी पाया जा सकता है।

सरिता बलोनी *जागोरी की कार्यकर्ता हैं।*